वक्रोक्ति

वक्रोक्ति — वक्रोक्ति का शब्दार्थ है — वक्र + उक्ति = टेढ़ा कथन या टेढ़ी उक्ति। सामान्य रूप में यह शब्द काव्यशास्त्र में "भामह" के द्वारा प्रयुक्त होता है। भामह ने काव्यालंकार में लोकव्यवहार से भिन्न अतिशयोक्ति को वक्रोक्ति माना है। यही नहीं, ने समस्त अलंकारों का मूल भी वक्रोक्ति को मानते है। वक्रोक्ति के अभाव में वे अलंकारों का अस्तित्व भी स्वीकार नहीं करते है।

"कुन्तक" — "काव्य निर्माण की अपूर्व कुशलता से लोकोत्तर चमत्कारप्राण विचित्र कथन वक्रोक्ति है"

विचित्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए कुन्तक ने इसके तीन अर्थ किये है :-

(क) शास्त्र आदि में प्रसिद्ध (प्रयुक्त) शब्द अर्थ के साधारण प्रयोग से भिन्न प्रयोग विचित्र कथन है।

(ख) शब्दार्थ - प्रयोग के प्रसिद्ध - मार्ग से भिन्न कथन।

(ग) सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त शब्द - अर्थ के प्रयोग से भिन्न कथन।

इन तीनों ही अर्थों का तात्पर्य यह है कि "कुन्तक" का "विचित्र" से अभिप्राय "शास्त्र तथा लोकव्यवहार में प्रयुक्त होने वाले शब्द - अर्थ की रचना से विलक्षण शब्दार्थ की उक्ति विचित्रोक्ति अर्थात वक्रोक्ति है।" यह वक्रोक्ति प्रतिभा सम्पन्न कवि के कर्म - कौशल से निर्मित होने पर ही वैचित्र्यपूर्ण होती है। इसी वक्रोक्ति को वे काव्य की आत्मा मानते है।

कुन्तक के अनुसार "अलंकृत होने पर ही काव्य की काव्यता है"

Scanned with CamScanner

"महिमभट्ट" — "शास्त्र आदि के प्रसिद्ध मार्ग को छोड़कर चमत्कार की सिद्धि के लिए दूसरे ढंग से जो अर्थ का प्रतिपादन होता है उसे वक्रोक्ति कहते हैं।"

कुन्तक के सम्पूर्ण विवेचन का सार यह है कि उनकी वक्रोक्ति चमत्कारप्राण है। वह चमत्कार उत्पन्न करने के कारण ही वक्र-उक्ति है। "कुन्तक" के अनुसार वक्रोक्ति से ही अर्थ का विभाजन होता है।

"अतः कवियों को इसके लिए विशेष सचेष्ट रहना चाहिए। क्योंकि इसके बिना न तो अलंकार का अस्तित्व रह सकता है और न उसका महत्व ही।"

कुन्तक ने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा सिद्ध किया है किन्तु उनके इस मत को परवर्ती काल में स्वीकार नहीं किया गया है। वे अकेले ही इस मत के प्रवर्तक तथा अनुयायी हैं। पीछे के काव्य-शास्त्रियों ने तो वक्रोक्ति को केवल एक अलंकार माना है।

कुन्तक ने वक्रोक्ति के छः भेद माने हैं—

(i) वर्ण-विन्यास-वक्रता –
(ii) पद-पूर्वार्द्ध-वक्रता –
(iii) पद-परार्द्ध-वक्रता –
(iv) वाक्य वक्रता –
(v) प्रकरण वक्रता –
(vi) प्रबन्ध-वक्रता –

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार